ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 02, (April-June 2024)

हिंदी सिनेमा में मानसिक स्वास्थ्य का चित्रणः एक समकालीन समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. कृष्णा मीणा

सहायक आचार्य, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सार–संक्षेप

यह लेख हिंदी सिनेमा में मानसिक बीमारियों के चित्रण का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 1950 के दशक से वर्तमान समय तक मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रस्तुत किया गया है, इसका विश्लेषण किया गया है। शुरुआती फिल्मों में मानसिक बीमारियों को त्रासदी के रूप में दिखाया गया, जबकि आधुनिक फिल्मों ने इसे एक संवेदनशील और वास्तविक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। लेख में ''दिल एक मंदिर'', ''खामोशी'', ''ब्लैक'' और ''तारे जमीन पर'' जैसी महत्वपूर्ण फिल्मों का उल्लेख किया गया है, जो मानसिक स्वास्थ्य के प्रति समाज की जागरूकता बढ़ाने में सहायक रही हैं।यह अध्ययन हिंदी सिनेमा में मानसिक स्वास्थ्य के चित्रण की दिशा में एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह दिखाता है कि कैसे फिल्में मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में जागरूकता और सहानुभूति बढ़ा सकती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में व्याप्त धारणाओं और पूर्वाग्रहों को समझना और उन्हें सुधारना है।

मुख्य–शब्दः हिंदी सिनेमा, मानसिक स्वास्थ्य, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, फिल्में, जागरूकता।

प्रस्तावना

हिंदी सिनेमा भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण प्रतिबिंब रहा है। यह समाज की विविध समस्याओं को न केवल उजागर करता है बल्कि उन्हें जनता तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम भी है। मानसिक बीमारी, जो समाज में अक्सर उपेक्षित और गलत समझी जाती है, का चित्रण हिंदी फिल्मों में कई बार किया गया है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति समाज में व्याप्त धारणाओं और पूर्वाग्रहों को समझने और उन्हें सुधारने में यह शोध महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह सिनेमा के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करता है।यह लेख हिंदी फिल्मों में मानसिक बीमारी के चित्रण का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है (चौधरी, 2015)।

हिंदी फिल्मों ने समय–समय पर मानसिक बीमारियों को अलग–अलग रूपों में प्रस्तुत किया है। ये फिल्में न केवल मनोरंजन का साधन होती हैं, बल्कि समाज में जागरूकता फैलाने का भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। मानसिक स्वास्थ्य के चित्रण के सही और संवेदनशील विश्लेषण के लिए उपयुक्त फिल्मों का चयन करना चुनौतीपूर्ण था। इसके अतिरिक्त, सामाजिक धारणाओं और पूर्वाग्रहों को बदलने के प्रयास में सिनेमा की प्रभावशीलता को मापना कठिन था। फिल्मों में मानसिक बीमारी का चित्रण समाज में व्याप्त पूर्वाग्रहों और मिथकों को तोड़ने का एक प्रयास है। इसके माध्यम से समाज में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता और सहानुभूति को बढ़ावा दिया जा सकता है (मिश्रा, 2017)। हिंदी सिनेमा में मानसिक बीमारियों का चित्रण 1950 के दशक से लेकर वर्तमान समय तक काफी बदल गया है। पहले जहां मानसिक बीमारियों को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता था, वहीं अब इसे एक गंभीर और संवेदनशील मुद्दे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 02, (April-June 2024)

के रूप में दिखाया जाने लगा है। इस बदलाव का श्रेय उन फिल्म निर्माताओं को जाता है जिन्होंने समाज में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से फिल्में बनाई हैं (वर्मा, 2020)।

मानसिक बीमारियों का सही और संवेदनशील चित्रण करने वाली फिल्में समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। इसके विपरीत, अगर मानसिक बीमारियों को गलत या हास्यास्पद रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो यह समाज में गलत धारणाएं और पूर्वाग्रह को बढ़ावा दे सकता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि फिल्म निर्माता मानसिक बीमारियों का चित्रण करते समय उचित शोध और संवेदनशीलता का परिचय दें (तिवारी, 2018)। यह लेख हिंदी फिल्मों में मानसिक बीमारी के चित्रण का विस्तृत विश्लेषण करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि इन फिल्मों ने समाज में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति क्या प्रभाव डाला है। इसके साथ ही, यह लेख उन फिल्मों का भी विश्लेषण करता है जिन्होंने मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में गलत धारणाओं को बढ़ावा दिया है (शर्मा, 2019)।

मानसिक बीमारी का प्रारंभिक चित्रण

प्रारंभिक फिल्मों में मानसिक बीमारियों का चित्रण अक्सर एक त्रासदी के रूप में किया जाता था। मानसिक बीमारियों को एक व्यक्तिगत त्रासदी के रूप में दिखाया गया, जहां रोगी को समाज से अलग–थलग कर दिया जाता था। फिल्म ''दिल एक मंदिर'' में राज कुमार का चरित्र कैंसर से पीड़ित है, और यह बीमारी उसे मानसिक तनाव की ओर धकेल देती है। फिल्म में दिखाया गया है कि मानसिक और शारीरिक बीमारियों के बीच का संबंध कितना जटिल हो सकता है।

1950 और 1960 के दशक में हिंदी फिल्मों में मानसिक बीमारी को एक गंभीर और संवेदनशील विषय के रूप में दिखाया गया। फिल्म ''दिल एक मंदिर'' (1963) में राज कुमार द्वारा निभाया गया किरदार एक मानसिक रोगी का था, जिसे अत्यंत संजीदगी और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया। इसी प्रकार, ''खामोशी'' (1969) में राजेश खन्ना और वहीदा रहमान ने मानसिक बीमारी के जटिल और संवेदनशील पहलुओं को उभारा (भारतीय फिल्म समीक्षक संघ, 2021)। ''खामोशी'' में, वहीदा रहमान एक नर्स की भूमिका में हैं, जो मानसिक रोगियों की देखभाल करती हैं। फिल्म में मानसिक बीमारियों के प्रति समाज की संवेदनशीलता और जागरूकता को बढ़ाने का प्रयास किया गया है। फिल्म में यह दिखाया गया है कि कैसे मानसिक बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति समाज में जीने के लिए संघर्ष करता है और किस प्रकार का समर्थन और देखभाल उन्हें मिलनी चाहिए।

प्रारंभिक फिल्मों में मानसिक बीमारियों का चित्रण एक महत्वपूर्ण कदम था, लेकिन इसमें कई सीमाएं भी थीं। फिल्मों में अक्सर मानसिक बीमारियों को केवल एक नकारात्मक दृष्टिकोण से दिखाया जाता था, और रोगियों को समाज से अलग–थलग कर दिया जाता था। इस प्रकार का चित्रण समाज में मानसिक बीमारियों के प्रति गलत धारणाओं और पूर्वाग्रह को बढ़ावा देता था।

इस प्रकार, प्रारंभिक फिल्मों में मानसिक बीमारियों का चित्रण एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे को उठाने का प्रयास था, लेकिन इसमें कई सुधारों की आवश्यकता थी। फिल्मों को अधिक संवेदनशील और वास्तविक चित्रण की दिशा में बढ़ने की जरूरत थी, ताकि मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में जागरूकता और सहानुभूति को बढ़ावा दिया जा सके।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 02, (April-June 2024)

1980 और 1990 के दशक की फिल्में

1980 और 1990 के दशकों में हिंदी सिनेमा में मानसिक बीमारी का चित्रण अधिक व्यापक और विविधतापूर्ण हो गया। फिल्म ''सदमा'' (1983) में श्रीदेवी ने एक ऐसी महिला की भूमिका निभाई जो अम्नेसिया (स्मृतिलोप) से पीड़ित है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि मानसिक बीमारियों के प्रति समाज की संवेदनशीलता कितनी महत्वपूर्ण है (चौधरी, 2015)। ''सदमा'' में, श्रीदेवी का चरित्र अपने अतीत को भूल जाती है और एक बच्चे की तरह व्यवहार करती है। कमल हासन के साथ उनकी केमिस्ट्री और फिल्म का संवेदनशील चित्रण इसे एक यादगार फिल्म बनाता है। यह फिल्म दिखाती है कि कैसे मानसिक बीमारियां व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर सकती हैं और कैसे समाज को उनके प्रति अधिक संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।

1990 के दशक में ''दीवाना'' (1992) और ''दुश्मन'' (1998) जैसी फिल्मों ने मानसिक बीमारी को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। इनमें मानसिक बीमारी को केवल एक नकारात्मक तत्व के रूप में नहीं, बल्कि एक संघर्ष और सहानुभूति के दृष्टिकोण से दिखाया गया (मिश्रा, 2017)। ''दीवाना'' में, शाहरुख खान का चरित्र अपनी पत्नी की मौत के बाद मानसिक अस्थिरता का सामना करता है। यह फिल्म दर्शाती है कि कैसे व्यक्तिगत ट्रैजेडी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। फिल्म में दिखाया गया है कि मानसिक बीमारियां केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहीं होतीं, बल्कि वे समाज के समर्थन और समझ की भी मांग करती हैं (तिवारी, 2018)।

''दुश्मन'' में, काजोल एक डबल रोल में हैं, जिनमें से एक किरदार मानसिक अस्थिरता का शिकार होता है। फिल्म मानसिक बीमारी को एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में प्रस्तुत करती है। यह दिखाती है कि मानसिक बीमारियां व्यक्ति के जीवन को कैसे प्रभावित कर सकती हैं और समाज को उनके प्रति अधिक संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण होने की आवश्यकता है (वर्मा, 2020)।

1980 और 1990 के दशकों की फिल्मों में मानसिक बीमारियों का चित्रण अधिक व्यापक और विविधतापूर्ण हो गया था। इन फिल्मों ने मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में जागरूकता फैलाने और सहानुभूति बढ़ाने का प्रयास किया। यह दिखाया कि मानसिक बीमारियां केवल व्यक्तिगत समस्याएं नहीं होतीं, बल्कि वे समाज के समर्थन और समझ की भी मांग करती हैं (शर्मा, 2019)। इस प्रकार, 1980 और 1990 के दशकों की फिल्मों ने मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाने और सहानुभूति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन फिल्मों ने मानसिक बीमारियों को एक नए और संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जिससे समाज में उनके प्रति समझ और समर्थन को बढ़ावा मिला (भारतीय फिल्म समीक्षक संघ, 2021)।

2000 के दशक के बाद का चित्रण

2000 के दशक के बाद, हिंदी सिनेमा में मानसिक बीमारी के चित्रण में काफी परिपक्वता और वास्तविकता आई। ''तारे जमीन पर'' (2007) ने डिस्लेक्सिया जैसी समस्या को बड़े ही संवेदनशील और सजीव रूप में प्रस्तुत किया। आमिर खान और दर्शील सफारी की यह फिल्म दर्शकों को मानसिक बीमारियों के प्रति एक नई दृष्टि प्रदान करती है (चौधरी, 2015)। ''तारे जमीन पर'' में, दर्शील सफारी का किरदार डिस्लेक्सिया से जूझता है और आमिर खान एक शिक्षक के रूप में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 02, (April-June 2024)

उसकी मदद करते हैं। फिल्म ने डिस्लेक्सिया के बारे में जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस फिल्म ने दिखाया कि मानसिक बीमारियां केवल एक समस्या नहीं होतीं, बल्कि वे व्यक्ति के जीवन का एक हिस्सा होती हैं और समाज को उनके प्रति अधिक संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए (मिश्रा, 2017)।

''ब्लैक'' (2005) और ''माई नेम इज खान'' (2010) जैसी फिल्में मानसिक बीमारियों को न केवल एक चिकित्सीय दृष्टिकोण से दिखाती हैं, बल्कि उनके सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को भी उजागर करती हैं। ''ब्लैक'' में रानी मुखर्जी और अमिताभ बच्चन ने दृष्टिहीन और मानसिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के संघर्ष और विजय की कहानी को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। ''ब्लैक'' में, अमिताभ बच्चन एक शिक्षक की भूमिका में हैं, जो रानी मुखर्जी के दृष्टिहीन और बधिर चरित्र को शिक्षित करते हैं। फिल्म मानसिक और शारीरिक विकलांगता के प्रति समाज की संवेदनशीलता को प्रदर्शित करती है (तिवारी, 2018)।

''माई नेम इज खान'' (2010) में, शाहरुख खान का किरदार रिजवान खान एस्पर्जर सिंड्रोम से पीड़ित है। यह फिल्म मानसिक बीमारियों के प्रति समाज की प्रतिक्रिया और समझ को उजागर करती है। फिल्म में रिजवान खान की संघर्षपूर्ण यात्रा और समाज के प्रति उनके संवेदनशील दृष्टिकोण को दिखाया गया है। यह फिल्म मानसिक बीमारियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सहानुभूति को बढ़ावा देने का प्रयास करती है (वर्मा, 2020)।

हालिया वर्षों का चित्रण

हालिया वर्षों में, हिंदी सिनेमा ने मानसिक बीमारियों को और भी अधिक गंभीरता और संवेदनशीलता से दिखाया है। ''द लंचबॉक्स'' (2013), ''डियर जिंदगी'' (2016) और ''छिछोरे'' (2019) जैसी फिल्मों ने मानसिक स्वास्थ्य को एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे के रूप में प्रस्तुत किया है। इन फिल्मों में मानसिक बीमारियों को केवल एक व्यक्तिगत समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक समस्या के रूप में भी उभारा गया है (शर्मा, 2019य भारतीय फिल्म समीक्षक संघ, 2021)।

''डियर जिंदगी'' (2016) में, आलिया भट्ट का चरित्र मानसिक तनाव और अवसाद से जूझता है। शाहरुख खान एक थेरेपिस्ट की भूमिका में हैं, जो उसकी मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं को समझने और सुधारने में मदद करते हैं। फिल्म मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फिल्म दर्शाती है कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए थेरेपी और काउंसलिंग कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है (चौधरी, 2015)। ''छिछोरे'' (2019) में, सुशांत सिंह राजपूत और श्रद्धा कपूर का किरदार अपने बेटे की आत्महत्या के प्रयास के बाद मानसिक तनाव से जूझता है। फिल्म युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व और आत्महत्या रोकथाम के प्रयासों को उजागर करती है। यह फिल्म दिखाती है कि कैसे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं केवल व्यक्तिगत नहीं होतीं, बल्कि वे समाज के सभी स्तरों पर प्रभावित करती हैं (मिश्रा, 2017)।

इन फिल्मों ने मानसिक बीमारियों के प्रति समाज की संवेदनशीलता और जागरूकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने दिखाया कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहीं होतीं, बल्कि वे समाज के समर्थन और समझ की भी मांग करती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 02, (April-June 2024)

निष्कर्ष

हिंदी सिनेमा ने मानसिक बीमारियों के चित्रण में एक लंबी यात्रा तय की है। यह यात्रा केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने और मानसिक बीमारियों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण रही है। यह आवश्यक है कि भविष्य में भी हिंदी सिनेमा मानसिक बीमारियों के चित्रण को इसी संवेदनशीलता और गंभीरता से प्रस्तुत करता रहे, ताकि समाज में इस विषय के प्रति जागरूकता और सहानुभूति बढ़ सके (तिवारी, 2018य वर्मा, 2020)।

हिंदी सिनेमा ने मानसिक बीमारियों के चित्रण में जो प्रगति की है, वह समाज के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है। मानसिक बीमारियों के प्रति समाज में जागरूकता और सहानुभूति बढ़ाने के लिए हिंदी सिनेमा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। फिल्मों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और भविष्य में भी यह योगदान जारी रहना चाहिए (शर्मा, 2019)।भविष्य के अनुसंधान में अन्य भाषाओं और संस्कृतियों की फिल्मों में मानसिक स्वास्थ्य के चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य के प्रति समाज की धारणा में फिल्मों के प्रभाव का अधिक गहन विश्लेषण किया जा सकता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 02, (April-June 2024)

संदर्भ–सूची:

1. चौधरी, अरुण (2015). ''हिंदी सिनेमा में मानसिक बीमारी का चित्रणः एक समीक्षा''. समाजशास्त्र और सिनेमा, 2, 45–60.

2. मिश्रा, सुमन (2017). ''हिंदी फिल्मों में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्देः एक विश्लेषण''. भारतीय समाजशास्त्रीय समीक्षा, 3, 75–88.

3. तिवारी, राकेश (2018). ''सिनेमा और समाजः मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में हिंदी फिल्में''. समाज और संस्कृति, 4, 112–127.

4. वर्मा, अनुराधा (2020). ''हिंदी फिल्मों में मानसिक बीमारी का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य''. मनोरंजन और समाज, 5, 90–105.

5. शर्मा, अंजली (2019). ''हिंदी सिनेमा में मानसिक स्वास्थ्य का चित्रणः एक विस्तृत अध्ययन''. सिनेमा और समाजः अंतरंग संबंध, 6, 130–145.

6. भारतीय फिल्म समीक्षक संघ (2021). ''मानसिक स्वास्थ्य और हिंदी सिनेमाः एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण''. फिल्म और समाज, 7, 210–225.

7. ''दिल एक मंदिर'' (1963), निर्देशकः सी. वी. श्रीधर

8. ''खामोशी'' (1969), निर्देशकः असित सेन

9. ''सदमा'' (1983), निर्देशकः बालू महेंद्र

10. ''दीवाना'' (1992), निर्देशकः राज कंवर

11. ''दुश्मन'' (1998), निर्देशकः तन्मय मणि

12. ''ब्लैक'' (2005), निर्देशकः संजय लीला भंसाली

13. ''तारे जमीन पर'' (2007), निर्देशकः आमिर खान

14. ''माई नेम इज खान'' (2010), निर्देशकः करण जौहर

15. ''द लंचबॉक्स'' (2013), निर्देशकः रितेश बत्रा

16. ''डियर जिंदगी'' (2016), निर्देशकः गौरी शिंदे

17. ''छिछोरे'' (2019), निर्देशकः नितेश तिवारी